DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Bara Chakia
BRABU - Muzaffarpur

BA (Hons.) Part - II
Subject - SANSKRIT
Paper - VI

6×5 = 30 Marks
Dated - 20.03.2020

समासप्रकरणे सूत्रव्याख्या (अव्ययीभावः)

2. **नस्तद्धिते** — यह विधिसूत्र है। नकारान्त भसंज्ञक अङ्ग के 'टि' भाग का लोप होता है, यदि तद्धित प्रत्यय परे हो तो। प्रस्तुत सूत्र भसंज्ञक नान्त अङ्ग की 'टि' के लोप का विधान करता है। 'भ' व्याकरण की एक संज्ञा है। सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्ययों को छोड़कर यकारादि और अजादि स्वादियों के परे रहते पूर्व की 'भ' संज्ञा होती है। पाणिनि ने इसे 'यचि भम्' से परिभाषित किया है। अचों के मध्य में जो अन्त्य 'अच्', वह जिस समुदाय के आदि में हो, उस समुदाय की 'टि' संज्ञा होती है। आचार्य ने इसे 'अचोऽन्त्यादि टि' से परिभाषित किया है। उदाहरणार्थ — राज्ञः समीपम् — इस विग्रह में राजन् ङस् उप — ऐसी स्थिति में समास, प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति लोप, उपसर्जन संज्ञा तथा पूर्वप्रयोग होकर 'उप राजन्' रूप बना। समासान्त टच् प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप होकर 'उपराजन् अ' रूप होता है। ऐसी स्थिति में प्रकृत सूत्र की प्रवृत्ति होती है। यहाँ 'उपराजन्' से समासान्त टच् (अ) प्रत्यय करने पर 'उपराजन्' की 'भ' संज्ञा होती है क्योंकि अजादि प्रत्यय परे है। उपराजन् में 'अन्' की 'टि' संज्ञा होती है। इस प्रकार राजन् शब्द नान्त है और अजादि प्रत्यय परे रहते भ संज्ञक भी है। अतः प्रकृत सूत्र से उसके टि भाग का लोप हो जाता है और 'उपराज् अ = उपराज' रूप बनता है। पुनः प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति विधान करने पर उपराजम् — रूप बनता है।

3. **नपुंसकादन्यतरस्याम्** — प्रकृत सूत्र विधि सूत्र है — विकल्प से 'टच्' प्रत्यय का विधायक सूत्र है। नपुंसक लिंग में वर्तमान जो अन्नन्त अव्ययीभाव तदन्त से समासान्त टच् प्रत्यय विकल्प से होता है — यह सूत्रार्थ है। टच् पक्ष में 'नस्तद्धिते' से 'टि' भाग का लोप हो जाता है। उदाहरणार्थ — चर्मणः समीपम् — इस विग्रह में 'चर्मन् ङस् उप' ऐसी स्थिति में समास विधान, प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति का लोप, उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वप्रयोग होकर 'उप चर्मन्' रूप हुआ। ऐसी स्थिति में प्रकृत सूत्र से विकल्प से

P.T.O.

समासान्त 'टच्' प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप होकर 'उपचर्मन् अ' रूप हुआ। 'नस्तद्धिते' से चर्मन् के 'टि' भाग का लोप होकर उपचर्म् अ = उपचर्म रूप हुआ। एकदेशविकृतन्यायेन पुनः प्रातिपदिक संज्ञा, प्रथमैकवचने सु विभक्ति, अमादेश तथा पूर्वरूप होकर 'उपचर्मम्' रूप सिद्ध होता है।

टच् के अभाव पक्ष में 'उपचर्म' रूप होता है।